समाज विकासमाला

रहीम के दोहे

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

Poetry
Raheem ke dhohe
Acc 24742/72.
Madava
yespal jain
Acc 23712/72
H/2958
13.1.77
R.B.A.N.M'S. HIGH SCHOOL LIBRARY
Accn. No. 2104
Sec. No. H 115
BANGALORE

समाज-विकास-माला : २४

रहीम के दोहे

संग्राहक
माधव

R.B.A.N.M'S H.S (M) LIBRARY
B'lore-2
Accession No ; 4195
U.D.C. No : 8-1-914.3(YAS)N58
Date; 15-3-83

संपादक
यशपाल जैन

१९५८
सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

2324
015216
N58

तीसरी बार : १९५८
मूल्य
सैंतीस नये पैसे 37 N.P

मुद्रक
हिंदी प्रिंटिंग प्रेस
दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही असान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों। यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इन सबकी भाषा बड़ी आसान रखी गई है और जहांतक हो सका है, मिले-जुले कठिन शब्दों का प्रयोग नहीं होने दिया है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। विषय ऐसे लिये गए हैं, जिनमें पाठकों की खास रुचि हो। छपाई-सफाई के बारे में विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

हम चाहते हैं कि इन किताबों को पढ़कर इनके बारे में पाठक हमें अपनी राय लिखें। यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में उन्हें सुधार की गुंजाइश मालूम होती हो तो उसकी भी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें। हम उनपर विचार करेंगे और उन सुझावों की बुनियाद पर किताबों को और ज्यादा अच्छी और उपयोगी बनाने का प्रयत्न करेंगे।

तीसरा संस्करण

बड़े हर्ष की बात है कि इस पुस्तक का तीसरा संस्करण इतनी जल्दी प्रकाशित हो रहा है। इस माला की सभी पुस्तकें पाठकों को पसंद आ रही हैं, इससे हमें बड़ा आनंद होता है। हमें विश्वास है कि इन सामयिक और उपयोगी पुस्तकों को पाठक चाव से पढ़ेंगे और इनके प्रचार में हाथ बटायेंगे।

—मंत्री

पाठकों से

हिंदी के पाठक रहीम का नाम अच्छी तरह से जानते हैं। वह आज से कोई साढ़े तीनसौ साल पहले हुए हैं, लेकिन उनके दोहे आज भी उतने ही ताजे हैं।

दोहों में उन्होंने बड़ी अच्छी-अच्छी बातें कही हैं। आदमी अपनी बुराइयों को दूर करे, अपने अंदर गुण पैदा करे, दूसरों को प्रेम करे, और ऐसी बहुत-सी उत्तम बातें उनके दोहों में पढ़ने को मिलती हैं।

रहीम की भाषा बड़ी सीधी-सादी है और अपनी बात उन्होंने बहुत सरल ढंग से कही है।

आप इन दोहों को अच्छी तरह से पढ़ें और दूसरों को भी पढ़वायें।

—संपादक

R. B. A. N. M'S. HIGH SCHOOL LIBRARY
Accn No
Sec. No
BANGALORE

R. B. A. N. M. S. HIGHER SEC SCHOOL LIBRARY :: BANGALORE. ::
Acc. No
Sec. No

रहीम

B. N. M. S. HIGHER SEC SCHOOL LIBRARY
Acci No ....
Sec No ....
:: BANGALORE. ::

R. B. A. N. M. S. HIGHER SEC SCHOOL LIBRARY
Acci No ....
Sec No ....
:: BANGALORE. ::

रहीम के दोहे

: १ :

रहीम कौन थे ?

कवि रहीम को कौन नहीं जानता ? बच्चे-बूढ़े सभीकी जबान पर उनके दोहे रहते हैं। उनका पूरा नाम अब्दुर्रहीम खानखाना था। 'खानखाना' की उपाधि उन्हें अकबर बादशाह से मिली थी।

रहीम का जन्म सन् १५५३ ई० में हुआ था। वह अकबर बादशाह के समय में हुए थे। हिंदी, फारसी, अरबी और संस्कृत के बड़े पंडित थे। अकबर उनका बहुत आदर करता था। अकबर के दरबार के नौ रत्नों में से वह एक थे। उनके पिता का नाम बैरमखां था।

रहीम बड़े भले थे। हमेशा दूसरों की मदद करते रहते थे। दानी इतने थे कि उनका मुकाबला बहुत कम लोग कर सकते थे। सालभर में जितना इकट्ठा करते, एक ही रोज में लुटा देते। उनकी इस तरह की दान-शीलता पर उन्हींके समय के कवि गंग ने एक

दोहे में उनसे सवाल किया—

"सीखे कहां नवाब जू, ऐसी देनी दैन।
ज्यों-ज्यों कर ऊंचे उठे, त्यों-त्यों नीचे नैन ।।"

रहीम ने उत्तर में तुरंत यह दोहा कहा—

"देनहार कोउ और है, भेजत सो दिन रैन ।
लोग भरम हम पै धरैं, याते नीचे नैन ।।"

दान-शीलता और नम्रता की इससे बड़ी मिसाल और क्या हो सकती है ?

मुसलमान होते हुए भी रहीम कृष्ण के भक्त थे। अपनी कविता में उन्होंने कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति का बहुत सुंदर वर्णन किया है :

जिहि रहीम चित आपनो, कीन्हों चतुर चकोर।
निसबासर लाग्यो रहै, कृष्णचन्द्र की ओर ।।
रहिमन कोऊ का करै, ज्वारी चोर लबार।
जो पति राखनहार है, माखन चाखनहार ।।

गोस्वामी तुलसीदास भी उन्हींके समय में हुए थे। उनसे रहीम की अच्छी जान-पहचान थी। एक दिन एक ब्राह्मण अपनी लड़की के ब्याह के लिए कुछ धन मांगने के लिए तुलसीदासजी के पास गया। तुलसी-

दास ने इस ब्राह्मण को रहीम के पास भेज दिया और उसके साथ एक आधा दोहा भी लिख भेजा—

"सुरतिय, नरतिय, नागतिय, तह चाहत सब कोय।"

रहीम ने उसे बहुत-सा धन दिया और आधे दोहे को पूरा करके वापस तुलसीदास के पास भेज दिया—

गोद लिये हुलसी फिरै, तुलसी सो सुत होय।।

'हुलसी' तुलसीदास की माता का नाम था और इस शब्द का अर्थ होता है—"हर्ष से फूली हुई।"

इस प्रकार की बहुत-सी कहानियां रहीम के बारे में कही जाती हैं।

एक बार रहीम का एक नौकर छुट्टी लेकर अपनी घरवाली से मिलने गया। छुट्टी के दिन बीतने पर जब वह वापस जाने की तैयारी करने लगा तो उसकी स्त्री ने उसे कुछ दिन और ठहरनें को कहा। किंतु नौकरी छूट जाने के डर से नौकर ने उसकी बात न मानी। तब स्त्री ने उसे एक लिफाफा दिया और कहा कि इसे अपने मालिक को दे देना। उसने ऐसा ही किया। जब रहीम ने उस लिफाफे को खोला तो उसमें लिखा था—

प्रेम प्रीति को बिरवा, चल्यौ लगाय ।
सींचन की सुधि लीज्यौ, मुरझि न जाय ।।

रहीम इसको पढ़कर सारी बात समझ गये। उन्होंने उसी समय उस नौकर को बुलवाया और बहुत-सा धन देकर बहुत दिनों की छुट्टी पर उसे वापस भेज दिया। यह 'बिरवै' उनको इतना अच्छा लगा कि उन्होंने इसी छंद में एक बड़े ग्रंथ की रचना की।

रहीम महाराणा प्रताप के स्वाभिमान और देश-भक्ति की बहुत प्रशंसा किया करते थे। एक बार रहीम के घर की कुछ स्त्रियां राजपूतों के हाथ पड़ गईं। महाराणा प्रताप ने बड़े आदर के साथ उन्हें रहीम के पास भिजवा दिया। तबसे राणा प्रताप पर रहीम की श्रद्धा और भी बढ़ गई। उन्होंने राणा प्रताप के विषय में राजस्थानी भाषा में भी बहुत-से दोहे लिखे थे। बानगी के रूप में एक दोहा देखिये—

धरम रहसी, रहसी धरा, खपजासी खुरसाणा ।
अमर विसंभर उपरै, रखियो न हचौ राणा ।।

अच्छे कवि होने के साथ-साथ रहीम वीर योद्धा भी थे। उन्होंने अकबर और जहांगीर के समय में कई बड़े विद्रोहों को दबाया था और बहुत-से सूबों को

जीतकर मुगल राज्य की सीमा को बढ़ाया था। उनकी इस वीरता के कारण उन्हें बहुत-सी जागीरें मिली थीं और वह बड़ी-बड़ी रियासतों के सूबेदार बनाये गये थे।

अपनी बेगम नूरजहां के कान भरने पर जहांगीर अपने बेटे शाहजहां से नाराज होगया। इस कारण शाहजहां ने अपने पिता के विरुद्ध बगावत कर दी। रहीम ने इस बगावत में शाहजहां का साथ दिया। इससे जहांगीर उनसे भी नाराज होगया और उनकी सारी जमीन-जायदाद छीनकर उन्हें जेल में डाल दिया। जब वह जेल से छूटे तो उनके पास कुछ भी नहीं था। छूटते ही वह चित्रकूट पहुंचे, किंतु उनकी दान-शीलता के कारण मांगनेवाले वहां भी उनके पीछे पड़े। इस पर बेबस होकर इन्होंने कहा—

ये रहीम दरदर फिरैं, मांगि मधुकरी खांहि।
यारो यारी छोड़ दो, वे रहीम अब नाहिं॥

इतने पर भी जब लोगों ने उनका पीछा नहीं छोड़ा तो इन्होंने रीवां के राजा के पास एक दोहा लिखकर भेजा—

चित्रकूट में रमि रहे, रहिमन अवध नरेस।
जापर बिपदा परत है, सो आवत यहि देस॥

इस दोहे को पढ़कर राजासाहब गद्गद् होगए। इससे उन्हें रहीम की गरीबी का पता चल गया। उन्होंने रहीम को एक लाख रुपया भेजा। रहीम ने सारा रुपया मांगनेवालों में बांट दिया, अपने पास कुछ भी नहीं रखा।

इस तरह वह काफी समय तक दुःख भोगते रहे और अंत में दिल्ली में सन् १६२५ ई० में ७२ वर्ष की उम्र में उनका देहांत होगया। उन्हें हुमायूं के मकबरे के पास दफना दिया गया।

रहीम के दोहे ज्ञान और नीति की बातों से भरे हुए हैं। छोटे-छोटे दोहों में उन्होंने गहरे भाव भर दिये हैं।

रहीम हिंदी में ही कविता नहीं करते थे। उन्होंने अरबी, फारसी और संस्कृत में भी कविताएं लिखी हैं।

आगे उनके दोहे पढ़िये।

R.B.A.I. M.S.H. (M.) LIBRARY
B lo 42
Accession No ; 4135
U.D.C. No :
Date; 15-3-83

रहीम के दोहे

तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिं न पान ।
कहि रहीम पर-काज हित, संपति संचहि सुजान ।।

सर सूखे पंछी उड़ैं, औरे सरन समाहिं ।
दीन मीन बिन पच्छ के, कहु रहीम कहं जाहिं ।।

संतत संपति जानि कै, सब को सबकोहु देत ।
दीनबंधु बिनु दीन की, को रहीम सुधि लेत ।।

समय दसा कुल देखि कै, सबै करत सनमान ।
रहिमन दीन अनाथ को, तुम बिन को भगवान ।।

धूर धरत निज सीस पर, कहु रहीम केहि काज ।
जेहि रज मुनिपत्नी[1] तरी, सो ढूंढत गजराज ।।

दीन सबन को लखत है, दीनहि लखै न कोय ।
जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबन्धु सम होय ।।

राम न जाते हरिन संग, सीय न रावण साथ ।
जो रहीम भावी कतहूं, होत आपुने हाथ ।।

१. अहल्या

गुन[१] तें लेत रहीम जन, सलिल कूप तें काढ़ि।
कूपहुं तें कहुं होत है, मन काहू को बाढ़ि॥

रहिमन मनहि लगाय कै, देखि लेहु किन कोय।
नर को बस करिबो कहा, नारायण बस होय॥

रहिमन अंसुआ नयन ढरि, जिय दुख प्रकट करेइ।
जाहि निकारो गेह तें, कस न भेद कहि देइ॥

रहिमन मन महराज के, दृग सो नाहिं दिवान।
जाहि देखि रीझे नयन, मन तेहि हाथ बिकान॥

सीत हरत तम हरत नित, भुवन भरत नहिं चूक।
रहिमन तेहि रबि को कहा, जो घटि लखै उलूक॥

कागज को सो पूतरा, सहजहि में घुल जाय।
रहिमन यह अचरज लखो, सोऊ खैंचत वाय[२]॥

ससि की सीतल चांदनी, सुन्दर सबहि सुहाय।
लगे चोर चित में लटी[३], घटि रहीम मन आय॥

अमृत ऐसे बचन में, रहिमन रिस[४] की गांस[५]।
जैसे मिसरिहु में मिली, निरस बांस की फांस॥

रहिमन नीचन संग बसि, लगत कलङ्क न काहि।
दूध कलारिन[६] हाथ लखि, मद समुझहिं सब ताहि॥

---

१. रस्सी, योग्यता २. सांस ३. बुरी ४. क्रोध ५. गांठ
६. शराब बेचनेवाली

अनुचित उचित रहीम लघु, करहिं बड़ेन के जोर ।
ज्यों ससि के संयोग तें, पचवत[1] आगि चकोर ।।

काम कछू आवै नहीं, मोल न कोऊ लेइ ।
बाजू टूटै बाज को, साहब चारा देइ ।।

नाद रीझि तन देत मृग, नर धन हेत समेत ।
ते रहीम पशु ते अधिक, रीझेहु कछू न देत ।।

अमरबेलि बिनु मूल की, प्रतिपालत है ताहि ।
रहिमन ऐसे प्रभुहि तजि, खोजत फिरिये काहि ।।

रहिमन याचकता गहे, बड़ो छोट ह्वै जात ।
नारायन हू को भयो, बावन आंगुर गात ।।

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि ।
जहां काम आवै सुई, कहा करै तरवारि ।।

रहिमन दानि दरिद्रतर, तऊ जांचबे जोग ।
ज्यों सरितन सूखा परै, कुवां खनावत लोग ।।

तबहीं लग जीबो भलो, दीबो[2] परै न धीम ।
बिन दीबो जीबो जगत, हमहिं न रुचै रहीम ।।

बड़े पेट के भरन में, है रहीम दुख बाढ़ि ।
यातें हाथी हहरि[3] कै, दयो दांत द्वै काढ़ि ।।

१. पचाता है, २. दान देना, ३. घबड़ाकर, गिड़गिड़ाकर

आप न काहू काम के, डार पात फल फूल।
औरन को रोकत फिरैं, रहिमन पेड़ बबूल॥

रहिमन कहत सुपेट सों, क्यों न भयो तू पीठ।
रीते[1] अनरीते[2] करत, भरे बिगाड़त दीठ[3]॥

कमला[4] थिर न रहीम कहि, यह जानत सब कोय।
पुरुष-पुरातन[5] की बधू, क्यों न चंचला होय॥

नैन सलोने अधर मधु, कहु रहीम घटि कौन।
मीठो भावै लोन पर, अरु मीठे पर लौन॥

धनि रहीम गति मीन की, जल बिछुरत जिय जाय।
जियत कंज[6] तजि अनत बसि, कहा भौंर को भाय॥

खीरा को मुख कटि के, मलियत लोन लगाय।
रहिमन करुए मुखन को, चहिअत यही सजाय॥

कहु रहीम कैसे निभै, बेर केर को संग।
वे डोलत रस आपने, उनके फाटत अंग॥

हरि रहीम ऐसी करी, ज्यों कमान सर पूर।
खैंचि आपनी ओर को, डारि दियो पुनि दूर॥

जो विषया संतन तजी, मूढ़ ताहि लपटात।
ज्यों नर डारत वमन[7] कर, स्वान स्वाद सों खात॥

---

१. खाली २. बुरा काम ३. आंख ४. लक्ष्मी ५. विष्णु, बूढ़ा
६. कमल ७. उल्टी, क

जे गरीब सों हित करैं, धनि रहीम वे लोग।
कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई[1] जोग॥

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चन्दन बिष ब्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग[2]॥

कोउ रहीम जनि काहु के, द्वार गये पछताय।
संपति के सब जात हैं, बिपति सबहिं लै जाय॥

जो रहीम ओछो बढ़ै, तो अति ही इतराय।
प्यादा[3] से फरजी भयो, टेढ़ो टेढ़ो जाय॥

प्रीतम छबि नैनन बसी, पर छवि कहां समाय।
भरी सराय रहीम लखि, आप पथिक फिर जाय॥

रहिमन राम न उर धरैं, रहत बिषय लपटाय।
पसु खर[4] खात सवाद सों, गुर गुलियाए[5] खाय॥

ससि, सकोच, साहस, सलिल, मान, सनेह रहीम।
बढ़त बढ़त बढ़ि जात हैं, घटत घटत घटि सीम॥

ओछो काम बड़े करैं, तौ न बड़ाई होय।
ज्यों रहीम हनुमंत को, गिरिधर कहे न कोय॥

यह रहीम निज संग ले, जनमत जगत न कोय।
बैर, प्रीत, अभ्यास, यश, होत होत ही होय॥

---

१. दोस्ती २. सांप ३. शतरंज का मुहरा ४. खली ५. बेमन से

यों रहीम सुख होत है, बढ़त देखि निज गोत।
ज्यों बड़री अंखियां निरखि, आंखिन को सुख होत ।।

जो पुरुषारथ ते कहूं, संपति मिलत रहीम।
पेट लागि बैराट घर, तपत रसोई भीम ।।

जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे[१] उजियारो लगै, बढ़े[२] अंधेरो होय ।।

रहिमन बिगरी आदि की, बनै न खरचै दाम।
हरि बाढ़ै आकास लौं, तऊ बावनै[३] नाम ।।

छोटन सौं सो हैं बड़े, कहि रहीम यहि लेख।
सहसन को हय[४] बांधियत, लै दमरी की मेख ।।

सब कोऊ सब सों करैं, राम जुहार सलाम।
हित अनहित तब जानिये, जा दिन अटकै काम ।।

कौन बढ़ाई जलधि मिलि, गंग नाम भो धीम।
केहि की प्रभुता नहिं घटी, पर घर गये रहीम ।।

मानसरोवर ही मिलै, हंसनि मुक्ता भोग।
सफरिन[५] भरे रहीम सर, बक बालकनहिं योग ।।

संपति भरम गंवाइ के, हाथ रहत कछु नाहिं।
ज्यों रहीम ससि रहत है, दिवस अकासहिं मांहि ।।

---

१. बचपन, जलना २. बड़ा होना, बुझना ३. ठिगना ४. हाथी
५. मछली

मांगे घटत रहीम पद, कितौ करौ बढ़ि काम ।
तीन पैग[1] बसुधा करी, तऊ बावनै नाम ।।

धनि रहीम जल पंक को, लघु जिय पियत अघाय ।
उदधि बढ़ाई कौन है, जगत पियासो जाय ।।

रहिमन कबहुं बड़ेन के, नाहिं गर्व को लेश ।
भार धरैं संसार को, तऊ कहावत शेष[2] ।।

दुरदिन परे रहीम कहि, भूलत सब पहिचानि ।
सोच नहीं वित हानि को, जो न होय हित हानि ।।

जो रहीम होतो कहूं, प्रभु गति अपने हाथ ।
तो कोधौं केहि मानतो, आप बड़ाई साथ ।।

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत ।
विपति कसौटी जे कसैं, तेई सांचे मीत ।।

जो रहीम तन हाथ है, मनसा कहुं किन जाहिं ।
जल में जो छाया परी, काया भीजति[3] नाहिं ।।

जिहि रहीम चित आपनों, कीन्हों चतुर चकोर ।
निशिवासर[4] लागी रहै, कृष्णचन्द्र की ओर ।।

कहि रहीम इक दीप तें, प्रगट सबै दुति होय ।
तनु सनेह कैसे दुरै, दृग दीपक जरु दोय ।।

---

१. कदम २. शेषनाग, शून्य ३. भीगना ४. दिन-रात

रीति प्रीति सब सों भली, बैर न हित मित गोत ।
रहिमन याही जनम की, बहुरि न संगति होत ॥

जैसी परै सो सहि रहै, कहि रहीम यह देह ।
धरती पर ही परत सब, शीत घाम औ मेह ॥

बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय ।
रहिमन फाटे दूध को, मथै न माखन होय ॥

रहिमन लाख भली करौ, अगुनी अगुन न जाय ।
राग सुनत पय[1] पियत हूं, सांप सहज धरि खाय ॥

रहिमन निज मन की व्यथा, मन ही राखौ गोय[2] ।
सुन अठिलैहैं[3] लोग सब, बांटि न लेहै कोय ॥

रहिमन वे नर मर चुके, जो कहुं मांगन जाहिं ।
उनते पहले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं ॥

धन दारा अरु सुतन सों, रहत लगाये चित्त ।
क्यों रहीम खोजत नहीं, गाढ़े दिन को मित्त[4] ॥

जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह ।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छांड़ति मोह ॥

गहि सरनागति राम की, भवसागर की नाव ।
रहिमन जगत उधार कर, और न कछू उपाव ॥

---

१. दूध २. छिपाकर ३. हँसेंगे ४. बुरे दिनों का मित्र, ईश्वर

रहिमन चुप ह्वै बैठिये, देख दिनन को फेर।
जब नीके[1] दिन आइहैं, बनत न लगि है देर॥

मथत मथत माखन रहै, दही मही बिलगाय।
रहिमन सोई मीत है, भीर परे ठहराय॥

होय न जाकी छांह ढिग[2], फल रहीम अति दूर।
बाढ़िहू सो बिनु काज ही, जैसे तार खजूर॥

यों रहीम गति बड़ेन की, ज्यों तुरंग[3] व्यवहार।
दाग दिवावत आपु तन, सही होत असवार॥

काज परै कछु और है, काज सरै कछु और।
रहिमन भंवरी[4] के भये, नदी सिरावत[5] मौर॥

रहिमन कोऊ का करै, ज्वारी चोर लबार।
जो पति-राखनहार है, माखन चाखनहार॥

खैर, खून, खांसी, खुसी, बैर, प्रीति, मद, पान।
रहिमन दाबे ना दबैं, जानत सकल जहान॥

रहिमन रहिला[6] की भली, जो परसै चित लाय।
परसत मन मैला करे, सो मैदा जरि जाय॥

रहिमन विपदाहू भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय॥

---

१. अच्छे २. पास ३ घोड़ा ४. विवाह के फेरे ५. बहाते
६. चने की रोटी

अब रहीम मुसकिल परी, गाढ़े दोऊ काम।
सांचे से तो जग नहीं, झूठे मिलैं न राम।।

कहि रहीम धन बढ़ि घटे, जात धनिन की बात।
घटै बढ़ै उनको कहा, घास बेंचि जे खात।।

बड़ माया को दोष यह, जो कबहूं घटि जाय।
तो रहीम मरिबो भलो, दुख सहि जिये बलाय।।

दादुर[1], मोर, किसान मन, लग्यो रहै घन मांहि।
रहिमन चातक रटनिहू, सरवर को कोउ नांहि।।

रहिमन अती न कीजिए, गहि रहिये निज कानि[2]।
सहिजन[3] अति फूलै तऊ, डाल पात की हानि।।

जो रहीम दीपक दसा, तिय राखत पट ओट।
समै परे ते होति है, वाही पट की चोट।।

रहिमन राज सराहिये, शशि सम सुखद जो होय।
कहा बापुरो[4] भानु है, तप्यौ तरैयन[5] खोय।।

यह न रहीम सराहिये, देन लेन की प्रीति।
प्रानन बाजी राखिये, हारि होय कै जीति।।

बड़े दीन को दुख सुने, लेत दया उर[6] आनि।
हरि हाथी सों कब हुती, कहु रहीम पहिचानि।।

---

१. मेंढक २. मर्यादा ३. सहजना ४. बेचारा ५. तारे ६. हृदय

जेहि रहीम तन मन लियो, कियो हिए बिच भौन[1] ।
तासो दुख सुख कहन की, रही बात अब कौन ॥

गरज आपनी आप सौं, रहिमन कही न जाय ।
जैसे कुल की कुलबधू, पर घर जात लजाय ॥

जहां गांठ[2] तहां रस नहीं, यह रहीम जग जोय ।
मंड़ये तर की गांठ में, गांठ गांठ रस होय ॥

चिंता बुद्धि परेखिए, टोटे[3] परख त्रियाहि ।
सगे कुबेला परखिए, ठाकुर गुनो किआहि ॥

जे सुलगे ते बुझि गए, बुझे ते सुलगे नाहिं ।
रहिमन दाहे प्रेम के, बुझि बुझि कै सुलगाहिं ॥

जेहि अंचल दीपक दुरयो, हन्यो सो ताही गात ।
रहिमन असमय के परे, मित्र शत्रु ह्वै जात ॥

जैसी जाकी बुद्धि है, तैसी कहै बनाय ।
ताको बुरा न मानिए, लेन कहां सो जाय ॥

जो रहीम करिबो हुतो, ब्रज को इहै हवाल ।
तौ काहे कर पर धर्‌यौ, गोवर्धन गोपाल ॥

तासों ही कछु पाइए, कीजै जाकी आस ।
रीते, सरवर पर गये, कैसे बुझै पियास ॥

---

१. निवास २. मनमुटाव, गांठ ३. गरीबी

अधम बचन काको फल्यो, बैठि ताड़ की छांह ।
रहिमन काम न आइहैं, ये नीरस जग मांह ।।

असमय परे रहीम कहिं, मांगि जात तजि लाज ।
ज्यों लछमन मांगन गये, पारासर के नाज ।।

आवत काज रहीम कहि, गाढ़े बंधु सनेह ।
जीरन होत न पेड़ ज्यों, यामे बरै बरेह[1] ।।

उरग, तुरग, नारी, नृपति, नीच जाति, हथियार ।
रहिमन इन्हें संभारिए, पलटत लगै न बार[2] ।।

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय ।
रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूले फलै अघाय ।।

अंतर दाव[3] लगी रहै, धुंआ न प्रगटै सोय ।
कै जिय जाने आपुनो, कै जा सिर बीती होय ।।

कैसे निबहैं निबल जन, करि सबलन सों गैर[4] ।
रहिमन बसि सागर बिषे, करत मगर सों बैर ।।

चाह गई चिंता मिटी, मनुवा बेपरवाह ।
जिनको कछू न चाहिए, वे साहन के साह ।।

थोथे बादर क्वांर के, ज्यों रहीम घहरात ।
धनी पुरुष निर्धन भये, करैं पाछिली बात ।।

---

१. बड़ के पेड़ की जटाएं २. देर ३. आग ४. शत्रुता

देनहार कोउ और है, भेजत सो दिन रैन।
लोग भरम हम पै धरैं, याते नीचे नैन।।

दोनों रहिमन एक से, जौ लौं बोलत नाहिं।
जान परत हैं काक[1] पिक[2], ऋतु बसंत के माहिं।।

बड़े बड़ाई न करें, बड़ो न बोलैं बोल।
रहिमन हीरा कब कहै, लाख टका मेरो मोल।।

बसि कुसंग चाहत कुसल, यह रहीम जिय सोस[3]।
महिमा घटी समुद्र की, रावन बस्यो परोस।।

मान सहित विष खाय के, संभु भये जगदीस।
बिना मान अमृत पिये, राहु कटायो सीस।।

रहमन अपने पेट सों, बहुत कह्यो समुझाय।
जो तू अनखाये रहे, तोसों को अनखाय[4]।।

रहिमन उजली प्रकृत को, नहीं नीच को संग।
करिया बासन[5] कर गहे, कालिख लागत अंग।।

रहिमन ओछे नरन सों, बैर भलो ना प्रीति।
काटे चाटे स्वान[6] के, दोउ भांति विपरीति।।

रहिमन खोजे ऊख में, जहां रसन की खानि।
जहां गांठ तहं रस नहीं, यही प्रीति में हानि।।

---

१. कौवा २. कोयल ३. शोक ४. नाराज ५. जला हुआ बरतन ६. कुत्ता

रहिमन गली है सांकरी[1], दूजो ना ठहराहि ।
आपु अहै तो हरि नहीं, हरि तो आपुन नाहिं ॥

रहिमन घरिया[2] रहंट की, त्यों ओछे की डीठ ।
रीतिहि सनमुख होत है, भरी दिखावै पीठ ॥

रहिमन छोटे नरन सों, होत बड़ो नहिं काम ।
फटो दमामो[3] ना बने, सौ चूहे के चाम ॥

रहिमन जगत बड़ाइ की, कूकुर[4] की पहिचानि ।
प्रीति करै मुख चाटई, बैर करै तन हानि ॥

रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गइ सरग-पताल[5] ।
आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल ॥

रहिमन तब लगि ठहरिए, दान, मान सनमान ।
घटत मान देखिय जबहिं, तुरतहि करिय पयान[6] ॥

रहिमन तीन प्रकार तें, हित अनहित पहिचानि ।
पर बस परे, परोस बस, परे मामिला जानि ॥

रहिमन दुरदिन के परे, बड़ेन किए घटि काज ।
पांच रूप पांडव भये, रथवाहक नल राज ॥

रहिमन धोखे भाव से, मुख से निकसे राम ।
पावत पूरन परम गति, कामादिक को धाम ॥

---

१. तंग २. पात्र ३. नगाड़ा ४. कुत्ता ५. उल्टी-सीधी, बुरी बात
६. हट जाना

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गांठ परि जाय॥

रहिमन निज संपति बिना, कोउ न बिपति सहाय।
बिनु पानी ज्यों जलज[1] को, नहिं रवि सकैं बचाय॥

रहिमन पर उपकार के, करत न यारी बीच।
मांस दियो शिवि भूप ने, दीन्हों हाड़ दधीच॥

रहिमन पानी[2] राखिए, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै मोती, मानुष चून॥

रहिमन प्रीति न कीजिए, जस खीरा ने कीन।
ऊपर से तो दिल मिला, भीतर फांकें तीन॥

रहिमन प्रीति सराहिए, मिले होत रंग दून।
ज्यों जरदी[3] हरदी तजै, तजै सफेदी चून॥

रहिमन बात अगम्य[4] की, कहन सुनन की नाहिं।
जे जानत ते कहत नहिं, कहत ते जानत नाहिं॥

रहिमन मारग प्रेम को, मत मतिहीन मझाव[5]।
जो डिगिहै तो फिर कहूं, नाहिं धरन को पांव॥

रहिमन या तन सूप है, लीजे जगत पछोर।
हलुकन को उड़ जान दै, गरुए राखि बटोरि॥

---

१. कमल २. जल, मान, चमक ३. पीलापन ४, बुद्धि की पहुंच से बाहर अर्थात् परमात्मा ५. जाओ ६. गंभीर, अन्न

रहिमन रहिबो वा भलो, जौ लौं सील[1] समूच।
सील ढील जब देखिवे, तुरत कीजिये कूच ।।

रहिमन रिस को छांड़ि कै, करौ गरीबी भेस।
मीठो बोलो नै चलो, सबै तुम्हारो देस ।।

रहिमन विद्या बुद्धि नहिं, नहीं धरम, जस, दान।
भूपर जनम वृथा धरै, पसु बिन पूछ विषान[2] ।।

वहै प्रीति नहिं रीति वह, नहीं पाछिलो हेत।
घटत घटत रहिमन घटै, ज्यों कर लीन्हें रेत ।।

सदा नगारा कूच का, बाजत आठों जाम[3]।
रहिमन या जग आइकै, को करि रहा मुकाम ।।

समय परे ओछे बचन, सबके सहै रहीम।
सभा दुसासन पट गहे, गदा लिये रहे भीम ।।

समय पाय फल होत है, समय पाय झरि जाय।
सदा रहे नहिं एक सी, का रहीम पछिताय ।।

छिमा बड़न को चाहिए, छोटन को उत्पात[4]।
का रहीम हरि को घट्यो, जो भृगु मारी लात ।।

मांगे मुकरि[5] न को गयो, केहि न त्यागियो साथ।
मांगत आगे सुख लह्यो, ते रहीम रघुनाथ ।।

---

१. मान २. सींग ३. पहर ४. उपद्रव
५. बात से फिर जाना

यों रहीम सुख होत है, उपकारी के अंग।
बांटन वारे के लगै, ज्यों मेंहदी को रंग॥

साधु सराहै साधुता, जती जोखिता[1] जान।
रहिमन सांचे सूर को, बैरी करै बखान॥

जो रहीम गति दीप की, सुत सपूत की सोय।
बड़ो उजेरा तेहि रहे, गये अंधेरो होय॥

टूटे सुजन मनाइए, जो टूटे सौ बार।
रहिमन फिरि फिरि पोहिए[2], टूटे मुक्ताहार॥

धन थोरो इज्जत बड़ी, कहि रहीम का बात।
जैसे कुल की कुलबधू, चिथड़न मांह समात॥

नात नेह दूरी भलो, जो रहीम जिय जानि।
निकट निरादर होता है, ज्यों गड़ही को पानि॥

पावस देखि रहीम मन, कोइल साधै मौन।
अब दादुर वक्ता भए, हमको पूछत कौन॥

रहिमन मोहि न सुहाय, अमी पिआवै मान बिनु।
वरु विष देय ुलाय, प्रेम सहित मरिबो भलो॥

यों रहीम सुख दुख सहत, बड़े लोग सह सांति।
उवत[3] चंद जेहि भांति सों, अथवत[4] ताही भांति॥

१. योगीपन २. पिरोना ३. उदय होना ४. अस्त होना

रहिमन बहु भेषज[1] करत, व्यधि न छांड़त साथ ।
खग मृग बसत अरोग बन, हरि अनाथ के नाथ ।।

सौदा करो सो करि चलो, रहिमन याही घाट ।
फिर सौदा पैहो नहीं, दूरि जान है बाट ।।

रहिमन मैन-तुरंग[3] चढ़ि, चलिबो पावक[4] मांहि ।
प्रेम-पंथ ऐसो कठिन, सब कोउ निबहत नांहि ।।

रहिमन वित्त अधर्म को, जरत न लागै बार[5] ।
चोरी करि होरी रची, भई तनिक में छार[6] ।।

रौल[7] बिगाड़े राजहूं मौल बिगाड़े माल ।
सनै सनै सरदार की चुगल बिगाड़े चाल ।।

भार[8] झोंकि के भार[9] में, रहिमन उतरे पार ।
पै बूड़े[10] मंझधार में, जिनके सिर पर भार ।।

कदली,[11] सीप, भुजङ्गमुख, स्वांति[12] एक गुण तीन ।
जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन ।।

चारा[13] प्यारा जगत में, छाला[14] हित कर लेय ।
ज्यों रहीम आटा लगे, त्यों मृदंग स्वर देय ।।

---

१. दवा २. मार्ग ३. मोम का घोड़ा ४. आग ५. देर ६. राख
७. हुल्लड़ ८. बोझा ९. भाड़ १०. डूबे ११. केला १२. स्वाति
बूंद की वर्षा १३. भोजन १४. मानव-शरीर

जो बड़ेन को लघु कहें, नहिं रहीम घटि जाहिं ।
गिरधर मुरलीधर कहे, कछु दुख मानत नाहिं ।।
निज कर क्रिया रहीम कहि, सिद्धि भावि[१] के हाथ ।
पांसे अपने हाथ में, दांव[२] न अपने हाथ ।।
पात पात को सींचिबो, बरी बरी को लौन ।
रहिमन ऐसी बुद्धि को, कहो बरैगो[३] कौन ।।
मूढ़मंडली में सुजन, ठहरत नाहिं बिसेखि ।
स्याम कचन[४] में सेत[५] ज्यों, दूरि कीजिअत देखि ।।
यह रहीम मानै नहीं, दिल से नवा जो होय ।
चीता, चोर, कमान के, नवे[६] ते अवगुन होय ।।

---

१. होनहार २. चाल ३. प्रशंसा करेगा ४. काले बाल
५. सफेद ६. झुकने से

R.B.A.N.M'S H.S (M) LIBRARY
B'lore-42

'मंडल' की दूसरी लोकप्रिय पुस्तकमाला

संस्कृत-साहित्य-सौरभ

संस्कृत के महान ग्रंथों का सरल-सुबोध हिंदी में कथासार।

१. कादम्बरी
२. उत्तररामचरित
३. वणीसंहार
४. शकुंतला
५. मृच्छकटिक
६. मुद्राराक्षस
७. नलोदय
८. रघुवंश
९. नागानद
१०. स्वप्नवासवदत्ता
११. मालविकाग्निमित्र
१२. हर्षचरित
१३. किरातार्जुनीय
१४. दशकुमार-चरित : भाग १
१५. दशकुमार-चरित : भाग २
१६. मेघदूत
१७. विक्रमोर्वशी
१८. मालती माधव
१९. शिशुपाल-वध
२०. बुद्ध-चरित
२१. कुमारसंभव
२२. महावीर-चरित
२३. रत्नावली
२४. पंचरात्र
२५. प्रियदर्शिका
२६. वासवदत्ता
२७. रावण-वध
२८. सौंदरनंद
२९. कुंदमाला
३०. यशस्तिलक
३१. तिलकमंजरी
३२. प्रतिमा-नाटक
३३. तीन नाटक

सरल भाषा, बढ़िया छपाई, आकर्षक कवर।

मूल्य प्रत्येक का सैंतीस नये पैसे

सस्ता साहित्य मण्डल

नई दिल्ली

R. B. A. N. M'S
High School (Main) Library

BOOK CARD

Author YASHPAL JAIN, Ed.

Title Raheem kae Dohae.

Account No. 4195.

Class No

Name of the Borrower	Card No.	Due Date.

समाज विकास - माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गांव सुखी, हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी - मानस - मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हारूं-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी भाग १
६८. सिंहासन-बत्तीसी भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी - जीवन
७०. मूरखराज
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक

मूल्य प्रत्येक का छः आना

High School (Main) LIBRARY

सस्ता साहित्य मण्डल

सैंतीस नये पैसे